प्रातःक्लास ओमशान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है? 12-2-68

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बैठ समझाते हैं। अभी यह तो बच्चे समझ गये हैं सृष्टि का ऊपर जाना और नीचे आना होता है। इनको भी एक चित्र युक्ति से बनाना चाहिए। बच्चे तो समझते हैं हम अभी ऊपर जा रहे हैं। सतयुग से त्रेता तक ऊपर ही रहते हैं। फिर नीचे उतरते हैं। यूं तो शुरू से ही नीचे आते हैं। बहुत धीरे-धीरे। चढ़ते तो फॉरन हैं। जैसे मच्छलियों की तार होती है ना उतरती है और चढ़ती है। तुम बच्चों की बुधि में यह हमेशा रहनी चाहिए हम ऊपर जा रहे हैं। हमारा घर तो ऊपर है ना। रचना के आदि, मध्य, अन्त को जान गये हैं। आदि ऊंच को कहा जाता है। मध्य बीच को कहा जाता है। अन्त नीचे को कहा जाता है। यह सृष्टि चक्र भी ऐसे ही फिरता रहता है। गोल चक्र है ना। सतयुग से त्रेता तक फिर द्वापर से कलियुग आता है। अर्थात स्वर्ग से फिर नर्क में आते हैं। अभी फिर हमको ऊपर जाना है। नंगे आये थे नंगे जाना है। यह ऊपर जाने और नीचे आने की एक कहानी है। दो अक्षर ही याद रहनी है। तुम राम का भी चित्र दिखाते हो, रावण का भी चित्र दिखाते हो। जैसे मनुष्य मुर्दे को श्मशान में ले जाते हैं तो पहले माथा शहर तरफ पांव श्मशान तरफ होते हैं। फिर जब श्मशान के नज़दीक आते हैं तो बदल कर पैर शहर तरफ, माथा श्मशान तरफ करते हैं। वैसे ही तुमको भी ऐसा चित्र बनाना चाहिए। रावण सम्प्रदाय का सिर नीचे हो, नीचे गिरते जाते हैं। स्वर्ग में जाने वालों का सिर ऊपर। समझाया भी जाता है अल्ला के बच्चे अल्ला ही होते हैं। फिर उल्लू के बनते हैं तो उल्टा लटक पड़ते हैं। उल्लू का सिर नीचे टांग ऊपर लटक पड़ते हैं। उनकी आंखें दिन में बन्द, रात को खुलती खुलती है। नाम ही है उल्लू। भारत में ही जास्ती उल्लू होते हैं। मनुष्य भी भारत में ही जास्ती उल्लू बन जाते हैं। तुम कितना अच्छा समझाते हो। यह शास्त्र आदि तुम्हारी रांग है। मनुष्य किसके बायोग्राफी से ऐसी भूल नहीं करते। जो बाप के बदली बच्चे का नाम डाल दे। अभी बाप बैठ समझाते हैं गीता का भगवान निराकार भगवान है न कि मनुष्य। सो भी पूरे 84 जन्म लेते हैं। पुनर्जन्म तो सभी लेते ही हैं। कोई तो सब से जास्ती भी लेते होंगे। यह हिसाब-किताब भी कोई जानते नहीं हैं। कितने बड़े2 एप्स हैं। समझाने से भी समझते नहीं। और गुरु-गुरु करते हैं। बच्चे भी अभी छोटे हैं। गोद में बिठाने लायक हैं। पैदल चलने जैसे भी नहीं हैं। बाबा ने कितना बार समझाया है तुम शंकराचार्य को चिट्ठी लिख सकते हो पुजारी कब पूज्य बन कैसे सकते। कितनी सहज बात है। परन्तु तुम्हारे दुश्मन हैं सब। क्योंकि तुम जानते हो कि हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाकी सभी का विनाश होना ही है। ड्रामा प्लैन अनुसार। बाप को बुलाते ही हैं पावन दुनिया स्थापन कर बाकी सभी को खत्म कर दो। खात्मा भी खुद ही मांगते हैं। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। पतित-पावन को बुलाते हैं तो जरूर भगवान आवेगा तो अनेकों का विनाश भी तो होगा ना। यह भी नहीं समझते हैं। वन्डर है ना। इसलिए पत्थर बुधि कहा जाता है। नई दुनिया को कहा जाता है गोल्डेन एज। पुरानी दुनिया को आयरनएज। पारस नाथ नाम है तो फिर पत्थर नाथ भी तो होते हैं ना। पवित्र को पारसनाथ, पतित को पत्थरनाथ कहा जाता है। कितनी अच्छी2 बातें हैं फिर भी समझते नहीं। तुम बड़े2 आदमियों को बुलाते हो और ही अहंकार में आकर बात करते हैं। समझते हैं इन्हों ने हमको मान देकर बुलाया है। बुलाने वाले जरूर छोटे आदमी ठहरे। उन्हों की दृष्टि ऐसी रहती है। कोई2 सुनने समय कहते भी हैं समझाते तो बहुत अच्छा हैं। परन्तु घर गये खलास। कांटों को फूल बनाने में कितनी मेहनत लगती है। इसलिए एक ही बाप है जो सर्वसमर्थ है उनको आना पड़ता है। चाहते भी हैं रामराज्य हो परन्तु अपने को रावण राज्य वाले समझते थोड़े ही हैं। कोई2 कहते हैं राक्षस राज्य है। परन्तु रामराज्य किसको कहा जाता है बुधि में नहीं आता। नई दुनिया स्वर्ग, पुरानी दुनिया नर्क किस चीज़ का नाम है यह भी किसको पता नहीं है। ऐसे2 मनुष्यों की बुधि को बाप के बगैर कौन पलटावे। बाप ही सर्वशक्तिवान है। बाप फर्स्ट क्लास पारस बुधि बनाते हैं। फिर रावण राज्य में पत्थर बुधि बन जाते हैं। कुछ भी बुधि में नहीं बैठता। तुम्हारी बुधि में अभी यह बातें हैं। तो यह नालेज सदैव बुधि में

टपकनी चाहिए। यह ख़ज़ाना ही तुमको साथ ले जाना है। ख़ज़ाना होगा तो साथ ले जावेंगे। आत्मा धारणा चाहिए। यहां बैठे भी बुधि से समझते हैं हम अभी ऊपरबाप के पास के पास जा रहे हैं। फिर बाबा मूलवतन आवेंगे। यह भी बाबा होकर आवेंगे। प्रजा भी आवेंगे। अभी सारा होलसाट वापस जाना है। अभी तुम बच्चों को बाप को भी याद करना है। देवीगुण भी धारण करने हैं। कई तो यह भी नहीं समझते हैं देवीगुण किसको कहा जाता है। आसुरी गुणों का शो करते रहते। यहां नशा चढ़ता है, घर में गये खलास। फिर बाल-बच्चे आद याद आ जाते। बाप तो कहते हैं इस शरीर को भी भूल जाओ बुधि से। खाओ, पीओ भले, बुधि से बाप को याद करो। कम कार है.... भक्ति मार्ग में भी बहुत अच्छे2 अव्यभिचारी भक्त होते थे। एक के सिवा और कोई की याद नहीं। पहले2 तो तुम एक की अव्यभिचारी एक शिव की पूजा करते थे ना। बहुत याद करते थे। एक शिव की ही मूर्ति थी। और कुछ नहीं था। उनको ही अव्यभिचारी पूजा कहा जाता है। शिव को ही याद करते हैं। ताकत भी मिलती थी। फिर देवतायें आद को याद करने लगे। बुधि को पाते गये। पहले तो एक ही शिव था। क्योंकि इस समय अन्त में तुमको शिव बाबा ही वर्सा देते हैं। तो जरूर उनकी शुक्रिया मानी चाहिए ना। भक्ति-मार्ग में पहले तो तुम ही थे। फिर इस्लामी आये। वह तो उस तरफ के ठहरे। शिव बाबा की भक्ति तुम ही करते थे। दूसरे तो बाद में शुरु होते हैं। जब कि बुधि को पावे। राजाई चेले पीछे शुरु करते हैं। तब तक तुम ही शिव की पूजा करते हो। और कोई का चित्र हो, कायदा नहीं। एक ही की अव्यभिचारी पूजा करते थे। बाप कहते हैं जैसे एक ही भक्ति करते थे वैसे तुम एक मुझे ही याद करो तो विकर्म विनाश हो। तुम तुम मेरे बच्चे मुझ एक के ही भक्ति करते थे। और कोई चित्र ही न था। बाप याद दिलाते हैं। अभी तुम कितने तमोप्रधान बुधि बन पड़े हो। अभी तुम्हारी याद अव्यभिचारी रहनी चाहिए। एक बाप से ही सुनना है। कोई2 फिर संगदोष में आकर औरों का भी सुनते हैं। आधा कल्प तो वेद-शास्त्र, ग्रंथ आद सुनते दुर्गति को ही पाया है। यह भी बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं अनेक बारी तुम ने यह याद की यात्रा की है। नम्बरवार तो हैं ना। सभी एकरस तो याद कर नहीं सकते। टीचर तो फिर भी पुरुषार्थ करावेंगे ना। हरेक सबजेक्ट में उठाते रहते हैं। मनसा नहीं बाबा, वाचा कर्मणा। मनसा अर्थात मनमनाभव, तो भी तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। वाचा से भी सभीको नालेज सुनाओ। कर्मणा तो एक दो की सेवा, सम्भाल आद करनी है। बाप समझाते हैं यहां रहने वालों का प्रदर्शि बाहर रहने वालों से होती है। वास्तव में वह कोई देते नहीं हैं। और ही सौगा लेते हैं। जब चावल-मूठी देते हैं तो समझना चाहिए हम तो शिव बाबा से लेते हैं। बाबा हमारी यह चावल मूठी स्वीकार कीजिये। हम एडवान्स में आप को थैंकस देते हैं। बाप को थैंकस नहीं कहने का होता है। हम अगर न लेंगे तो जमा हो कैसे हो सकता है। नहीं तो जिसको चीज़ मिलती है वह उनको थैंकस देते हैं। यहां वह बात नहीं। तुमको ही सौगा हो मिलता है। इसलिए तुम ही थैंकस देते हो। यह बड़ी ही समझ की बात है। इसलिए ऐसा कोई न समझे कि हम देते हैं। यह ख़याल आनेसे ही पापात्मा बन पड़ते हैं। ईश्वर से तो लेते हैं ना। बाप आप हमारी दो मूठी लेते हो यही आप की शुक्रिया है। जो फिर आप हमको भविष्य में सेफ्टी से देंगे। बाप जैसे कि अमानत लेते हैं। फिर सौगा कर देने लिए। बहुतों को अहंकार रहता है। हम ने इतना दिया है। ज्ञान तो पूरा है नहीं। समझो शिव जयन्ति पर भेज देते हैं तो कहना चाहिए बाबा कृपा कर आप स्वीकार करना। आप तो रिटर्न में देने वाले हो। देने साथ थैंकस भी देना चाहिए। बाबा आप लेते हो फिर जमा करते हो। यह राज़ न समझने कारण गिनती करते रहते हैं हम ने इतना दिया है। और तुम तो बाबा पास अमानत रखते हो सौगा करने लिए। अगर तुम्हारा हम जमा न करें तो मिलेगा कहां से। अहंकार आने फिर ताकत कम हो जाती है। देहाभिमान की टेव बहुत पड़ी हुई है। समझते हैं हम ने बहुत दिया है। अब जास्ती नहीं देंगे। ऐसे बहुतों का अन्त में चलता है।

3बाप तो=दाता=देने वाला है बाप लेने वाला नहीं

बाप तो दाता देने वाला है ना। लेने वाला नहीं है। अमानत बच्चों के लिए ही लेते हैं तो वहां कितना सोणा घर देते हैं। पॉईन्ट: कितनी अच्छी2 है। ऊपर जाना बहुत नाजुक है। ऐसा न हो और ही घाटा पा ले। देहीअभिमानी बनने मे ही मेहनत लगती है। सहज भी बहुत है। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। बाप कहते हैं अब नई दुनिया मे चल वहां नई2 शरीर लेना है। यहां कोई से भी दिल न लगाओ। देह सहित देह के कोई भी सम्बन्ध याद न रहे। कितना क्लीयर है। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। बाबा ने समझाया है यह है भक्ति की गीता। ज्ञान-मार्ग के कोई शास्त्र होता नहीं। ज्ञान अभी तुम सुनते हो। फिर प्रारब्ध मे चले जाते हो। अभी सुनासो सुना। फिर शास्त्र रहती नहीं है। भक्ति मार्ग मे तो शास्त्र आद गीतायें छपती ही आती है। उनको कहा जाता है भक्ति मार्ग। यह क्लीयर कर लिखना चाहिए। झूठे अक्षर कहने से मनुष्य बिगरते हैं। बोलो यह है भक्ति मार्ग की गीता। जो जन्म-जन्मान्तर पढ़ते आते हैं। ज्ञान जन्म-जन्मान्तर नहीं सुना जाता। ज्ञान से तो सदगति हो जाती है। ज्ञान मिलेगा ही तब जब कि सदगति होने को होगी। बाकी हो जाती है भक्ति। मनुष्य शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते है यह भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं। इससे मेरे साथ कोई भी मिल न सके। मैं तो जब आऊं तब ही आकर रास्ता बताऊं। माया ने सभी को अंधा बना दिया है। आत्मा मे ज्ञान का तीसरा नेत्र है ही नहीं। अभी तुम्हारी आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। अपने को आत्मा समझो तो ज्ञान की धारणा भी हो। देहाभिमान मे आने से ही बड़े विकार आते हैं। देहीअभिमानी बड़े ही शान्त रहेंगे। उल्टा सुल्टा कुछ भी बोलना नहीं है। स्वधर्म में टिकना है। तुमको अभी नालेज मिलती है आत्मा है ही शान्त स्वरूप। शान्ति कोई कहां से मिलेगा नहीं। आत्माको तो शरीर द्वारा कर्म करना, पार्ट बजाना ही है। अभी अशान्ति है क्योंकि रावण राज्य है। अभी आत्माभिमानी बनने से तुम आधा कल्प शान्ति में रहते हो। देहाभिमानी बनने से अशान्ति शुरू हो जाती है। इस समय 100% देह-अभिमानी बने हैं। अभी तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनने में कितनी मेहनत लगती है। बाप समझाते हैं हर 5000 वर्ष बाद तुम देहीअभिमानी बनते हो। अपना राज भाग लेते हो। यह एक अन्तिम जन्म देही-अभिमानी जरूर बनना है। सन्यासियों के लिए बाबा ने समझाया है पहले जब वह सतोप्रधान थे तो जंगल में रहते थे। उनको रोटी वहां पहुंचाते थे। राजाएं भी उन्हों को रोटी पहुंचाते थे। अभी वह ताकत न रही है तो कुटियाओं मे चले आये हैं। अभी कुटियाएं खाली पड़ी है। अभी कहते है गवर्मेन्ट को कि हम ने घर-बार छोड़ा है। फिर अन्दर घर में क्या आये बैठे हैं। गवर्मेन्ट को भी पता थोड़े ही पड़ता है। पत्थर बुधि मनुष्य हैं ना। रावण के गवर्मेन्ट तो सभी रावण सम्प्रदाय ही ठहरे। विषय वर्ल्ड है ना। कहा जाता है वेश्यालय। भारत का नाम भी खराब इन्हों ने ही किया है। यूं तो है ही वेश्यालय। परन्तु उन में भी फिर यह अति वेश्यालय है। नाम-बदनाम करने वाले हैं। कालेजों में, स्कूलों में कुमार-कुमारियां कितनी गंदे होते रहते हैं। यहां भी चलते कुमारियां पर राहू का ग्रह बैठ जाता है। कोई तो ट्रेटर भी बन पड़ते हैं। जैसे उस लड़ाई मे ट्रेटर बनते हैं ना। यहां भी ऐसे ही हैं। ईश्वर का बन फिर बाया तरफ चले जाते हैं। ट्रेटर उनको कहा जाता है जो बाप का नाम-बदनाम करते हैं। बहुत खबरदारी रखनी चाहिए। हम बाबा का नाम बाला करें। बाप कितना समझाते हैं सब का कल्याण करो। लोग अक्षर कहने से किसकी बुधि मे नहीं बैठता है। याद मे रहना है। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम बाप का वर्सा पा लेंगे। यह (ल०ना०) बाप का वर्सा है ना। बाप स्वर्ग रचते हैं। यह स्वर्ग के मालिक बनते हैं तो वर्सा लिया ना। पुरुषोत्तम संगम युग पर। इस समझाने में कोई तकलीफ नहीं है। यह तो बहुत सहज है। सिर्फ निश्चय बुधि मे हो। बाप से बहुत लव चाहिए। कई तो बाप को याद भी नहीं करते हैं। बाप तो इतना देते हैं जो उन को कब छोड़ा नहीं जा सकता। चकमक है ना। सुई बिलकुल प्यूर हो जाती है तो एकदम चिपक जाती है। उनको छुड़ाया नहीं जा सकता। इतना लव न होने के कारण छोड़ कर जाते हैं। वह सब धंधे क्या है कुछ भी नहीं।

नम्बरवन धंधा तो यह है जो कोई विरला व्यापारी करे। देही-अभिमानी होने से फिर कट छोड़ब नहीं सकते। विचार किया जाता है कितना ऊंच बाप है, बात मत पूछो। सारे विश्व को प्राण दान देते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति में ले जाते हैं। ऐसे बाप पर कितना लव होना चाहिए। कितनी नम्रता होनी चाहिए। यहां तो और ही उनको बहुतों से नम्रता से चलना पड़ता है। उनको तो कुछ होता नहीं है। पत्थर मारते हैं, गाली देते हैं शिव बाबा को कुछ हो न सके। वह तो बेसमझी से गाली दे देते हैं। बाकी उनको कुछ होता नहीं है। निराकार को गाली कैसे देंगे। नाम रूप वाला को गाली मिलेगा ना। यह बाबा की नालेज कितनी वन्डरफुल और अति सहज है। कहते बच्चे तुम हर 5000 वर्ष बाद यह पार्ट बजाते हो। सभी मनुष्य मात्र पार्टधारी हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप समझाते हैं, वह नहीं। इन में कोई ज्ञान थोड़े ही था। कोई2 समझते हैं इनको कोई गुरु से ज्ञान मिला है। अगर गुरु होता तो फिर वह बहुतों को देवे ना। एक को सिर्फ छिपा कर थोड़े ही देंगे। ऐसे बहुत समझते हैं इतने गुरु किये हैं शायद पिछाड़ी वाले गुरु से डात वा शक्ति मिली है।

तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों, परन्तु जब कि ऐसे मीठे बनो। बहुत मीठे से मीठा वर्सा मिलता है। विश्व की बादशाही देख दिल ही खुशी खुश हो जाती है। मैं यह बनुंगा। फिर अन्त मते सो गते हो जावेंगे। एक मिशाल बताते हैं ना। एक ने कहा मैं भैंस हूं मैं भैंस हूं। तो उनको यह एकदम पक्का हो गया। बोले मैं भैंस हूं इस खिड़की से कैसे निकलूं। अभी तुम बच्चे समझते हो शिव बाबा को याद करना है। याद करते2 बाबा पास चले जावेंगे। बाप से हमको यह वर्सा मिलता है। तब ही बाबा ने कहा था प्रभात फेरी बाद में भी इस ल0ना0 का चित्र उठाओ। हम यह वर्सा ले रहे हैं। विश्व में शान्ति का राज्य था। इनका राज्य था ना। वहां तो है ब्रह्म में शान्ति। यह है विश्व में शान्ति का राज्य। कितना समझाते रहते हैं। बहुत थोड़े भाग्यशाली निकलते हैं। फिर भी पुरुषार्थ बहुत करना चाहिए। कल्प2 राजधानी स्थापन होती है। तकलीफ तो कोई बात ही नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं। बाबा जानते हैं कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है ऐसा ही करते हैं। फिकरात की बात ही नहीं। बाकी बच्चों को फिकरात है यह याद की यात्रा में। यह बहुत ही ऊंची सीढ़ी है। बहुत गुप्त मेहनत है। याद करना ही माया भूला देती है। योग नहीं तो ज्ञान भी कम है। ज्ञान तो दरियादिल ही सिम्पुल है। मूल बात है बाप को याद करो और कराओ। पिछाड़ी में थोड़े ही टाईम मिलेगा। अभी ही पुरुषार्थ करना है। बहुतों को तो यह बैज लगाने भी लज्जा आती है। यह नहीं समझते हैं यह तो ज्ञान की तलवार है। कोई को भी इस पर समझा सकते हैं। परन्तु लगाते ही नहीं हैं। बैज को देखे आपे ही पूछेंगे यह कहां से मिला है। तुम किस संस्था के हो। बोलो हम ईश्वरीय सन्तान हैं। बेहद के बाप से यह वर्सा स्वर्ग का ले रहे हैं। बाप को याद करनेसे ही पाप कट जावेंगे। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। कितनी सहज बात है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग। रही हुई पाईन्ट:-सभी कहते हैं हम ल0ना0 बनेंगे। बन दिखाओ। रजिस्टर रख दिखाओ। विजय माला में आना कोई मासी का घर नहीं। कोई विरले हैं तो अपनपर ध्यान रखते हैं। मायाबड़ी जबरदस्त है। बाप का कहना भी मानते नहीं। पुरुषार्थ करते2 पिछाड़ी में अडोल अवस्था में रह सकेंगे। इसलिए माला भी बहुत थोड़े की ही बनती है। अभी कैसेटर्स का रजिस्टर भी लेआना चाहिए। रोज़ कितना समय पढ़ा, कितना समय याद में रहा। क्या खाया-पीया। चार्ट रखने में अपनी चलन की बड़ी सेफ्टी है। कितना समय खाता हूं। कितना समय सोता हूं, क्या2 करता हूं। सब लिखना चाहिए। (10-/2-68) प्रातः)

यहां बाप ओमनीप्रेजेन्ट है। सफण्ड में आ सकते हैं। तुमको समझना चाहिए बाबा इस में बैठा ही है। करन-करावनहार है ना। करते भी हैं कराते हैं। बच्चों को डायरेक्शन भी देते हैं। और करते भी रहते हैं। क्या2 कर सकते है क्या न कर सकते हैं। बैठ हिसाब निकालो। इस=अवतार में क्या2 कर सकते हैं। वासना ले सकते हैं? वासना क्या चीज़ है? क्या कर सकते हैं क्या कर सकते हैं। अच्छा। (11-2-68 प्रातः)